ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-4* May- 2020
Innovation The Research Concept

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

Study of educational ideas of Mahatma Gandhi

Paper Submission: 20/05/2020, Date of Acceptance: 27/05/2020, Date of Publication: 28/05/2020

सतीश कुमार मौर्य
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मालवांचल विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

अश्विनी कुमार गुप्ता
शोध निर्देशक
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मालवांचल विश्वविद्यालय,
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध–प्रपत्र में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। भारत का भविष्य शिक्षा पर निर्भर है, किन्तु मानव–जीवन इतना जटिल है कि प्रारम्भ में इसकी एक समस्या थी कि जीवन की रक्षा कैसे की जाये। कालान्तर में मनुष्य का जीवन जटिलतम होता गया और उसके सामने अनेक समस्यायें आने लगी, समय–समय पर समाधान के लिये शिक्षा का सहारा लिया गया। शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है, जीवन के इन अनुभवों से सीखना ही शिक्षा है। शिक्षा मुक्ति पर्यन्त चलने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य को अपने यथार्थ का बोध होता है, जीवन जगत के प्रति उसके व्यवहार एवं विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं संशोधन होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है, शिक्षा एक बहुअर्थी शब्द है इसे पूर्णतया परिभाषित करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। अनेक शिक्षाशास्त्रियों एवं दार्शनिकों ने शिक्षा के सम्बन्ध में समय–समय पर अपने विचार प्रस्तुत किये जो कि एक–दूसरे से मिलते–जुलते है और पूर्णतया अलग भी होते है।

The academic ideas of Mahatma Gandhi have been studied in the research paper presented. India's future is dependent on education, but human life is so complex that initially it had a problem how to protect life. Over time, the life of a human being became complicated and many problems started coming in front of him, from time to time, education was resorted to for solution. Education is a life-long process, a man keeps on learning something from birth to death, learning from these experiences of life is education. Education is a spiritual process lasting till liberation in which a person realizes his reality, his behavior and thoughts towards the world of the world constantly change, scour and amend. Therefore, it can be said that life is education and education is life, education is a multi-purpose word, it is difficult to define it completely, if not impossible. Many educationists and philosophers have from time to time presented their views regarding education, which are similar to each other and also completely different.

मुख्य शब्द : महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन
Study of educational ideas of Mahatma Gandhi

प्रस्तावना

आधुनिक समय में शिक्षा का स्तर परिस्थिति के अनुसार क्रमबद्ध नहीं दिखाई दे रहा है, इस स्थिति पर लोगों का ध्यान नहीं जा रहा है, जबकि इस बिन्दु पर गहराई से विचार–विमर्श एवं कार्यगोष्ठी करने की आवश्यकता है, जिससे शैक्षिक स्तर पर सुधार किया जा सके, उसके साथ ही शैक्षिक समाज का निर्माण हो सके। प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में सुधार की आवश्यकता है, शिक्षा की इस समस्या पर शिक्षा–विचारों तथा बुद्धजीवी लोगों को ध्यान देने की आवश्यकता है, तभी शिक्षा में सुधार संभव हो सकेगा, इसके साथ ही शैक्षिक राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

समस्या कथन

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी प्रकार के शोध में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन को निश्चित दिशा देता है, जिससे अध्ययन का निश्चित परिणाम मिलता है। अतः शोधार्थी ने शोध–अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किया है:–

1. महात्मा गांधी के दार्शनिक विचारों का अध्ययन उनके ग्रन्थों के आधार पर करना।
2. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की पृष्ठभूमि में उनके शिक्षा–दर्शन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
3. महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के विश्लेषण के स्वरूप का प्रस्तुतीकरण।
4. महात्मा गांधी के विचारानुसार शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षा पद्धतियों, पाठ्यक्रम, अनुशासन, स्त्री–शिक्षा, जन–शिक्षा, शिक्षक की वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में विवेचना करना।
5. महात्मा गांधी के शिक्षा–दर्शन की समानता का अध्ययन करना।

शोध का परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा गांधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन को शामिल किया गया है और उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में बेहतर बनाये रखने के लिये सफल प्रयास किया गया है।

शोध–विधि

प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसन्धान के अन्तर्गत लिखित दस्तावेजों, प्रमाण–विधि, वर्णनात्मक विधि, एवं तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार

शिक्षा के क्षेत्र में गांधी जी ने भारत में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है वह कार्य शिक्षा के इतिहास में अद्भुत माना जाता है, इनकी मान्यता थी कि राष्ट्र एवं चरित्र निर्माण के लिये आने वाली पीढ़ी को शिक्षा की उत्तम व्यवस्था प्रदान की जाये, जिससे नये राष्ट्र का निर्माण हो। गांधी जी हस्त कौशलों एवं मातृभाषा की शिक्षा पर विशेष बल देते है, साथ ही वह आध्यात्मिक उन्नति भी करना चाहते है, इसलिए उन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य को एकादशा वव्र (सत्य, अहिंसा, ब्रहम्चर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अस्पृश्यता निवारण, कायिक श्रम, सर्वधम सम्भाव और विनम्रता) पालन की ओर प्रवृत्त करने पर बल दिया। गांधी जी अपनी शिक्षा दर्शन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बेसिक शिक्षा का नाम दिया। गांधी जी के शैक्षिक विचार निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता हैः–

शिक्षा का अर्थ

गांधी जी के दृष्टि से शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास का महत्वपूर्ण साधन है, शिक्षा के द्वारा सामाजिक प्रगति नही हो सकती वरन् उसके नैतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास भी हुआ करता है। गांधी जी ने वर्धा शिक्षा योजना की नींव डाली थी, चौदह वर्ष तक के बालक–बालिकाओं के लिये बनायी गयी थी, यह योजना गांधी जी द्वारा समर्पित शिक्षा–प्रणाली उनके जीवन–दर्शन पर आधारित है। उनके जीवन दर्शन से सत्य, अहिंसा एवं न्याय का प्रमुख स्थान था। गांधी जी की शिक्षा व्यवस्था इन्ही तथ्यों पर आधारित थी, गांधी जी कहते है कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य है कि बालक और मनुष्य में निहित शक्तियों का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास के स्वरूप से है।

शिक्षा का उद्देश्य

गांधी जी शिक्षा के द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास करना चाहते है। सर्वागीण विकास हेतु हृदय, शरीर एवं मन का विकास आवश्यक मानते है। गांधी जी तत्कालीक उद्देश्य के अन्तर्गत चरित्र निर्माण, स्वतन्त्र विकास, सांस्कृतिक विकास, स्वभाव की पूर्णता, सामाजिक उद्देश्यों के समन्वय से लिया है। गांधी जी के विचारों के अन्तर्गत आत्मअनुभूति का ईश्वर ज्ञान एवं अन्तिम वास्तविकता का अनुभव मानते है।

पाठ्यक्रम

महात्मा गांधी जी साहित्यिक, वैज्ञानिक, कलात्मक एवं रचनात्मक विषयों को पढ़ाने के पक्ष में थे, किन्तु वे आध्यात्मिक एवं जीविकोपार्जन दोनों की लक्ष्यों को दृष्टिगत करके पढ़ाना चाहते है, इन्होंने इन आवश्यकताओं की पूर्ति एवं वर्ग–विहिन समाज का निर्माण करने के लिए क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम पर बल दिया। पाठ्यक्रम मे हस्त–कला एवं मातृभाषा को आवश्यक मानते थे।

शिक्षण–विधि

गांधी जी शिक्षण के क्षेत्र में क्रिया–पद्धति पर अधिक जोर देते है, इनके अनुसार करके सीखना, स्वयं के अनुभव से सीखना ही उत्तम सीखना है, वैसे ये कथन व्याख्यान एवं प्रश्नोत्तर विधि को महत्व प्रदान करते है, उपनिषद एवं वेदांत द्वारा प्रतिपादित श्रवण मनन एवं निदिध्यासन विधि में विश्वास रखते है।

शिक्षक

गांधी जी की दृष्टि में अध्यापक को समाज का आदर्श व्यक्तित्व, ज्ञान का पुंज एवं सत्य का आचरण करने वाला होना चाहिए। एक अध्यापक आदर्श तभी हो सकता है जब वह इस व्यवसाय को सेवा–कार्य के रूप में स्वीकार करें, उसे बच्चों के पिता, मित्र, सहयोगी और पथ–प्रदर्शक अनेक रूपों में कार्य करना होता है, इसलिए उसे सहिष्णुता, उदारता एवं धैर्यवान होना चाहिए।

अनुशासन

गांधी जी अनुशासन के महत्व को स्वीकारते है, उनकी दृष्टि में सच्चा अनुशासन आत्म प्रेरित करता है, इस अनुशासन की प्राप्ति के लिये ये दम्नात्मक विधि का विरोध करते है उनकी दृष्टि में सच्चे अनुशासन का विकास प्रभावात्मक विधि द्वारा किया जा सकता है, ये बच्चों में शुद्ध प्राकृतिक वातावरण एवं उच्च सामाजिक पर्यावरण पर बल देता है।

स्त्री–शिक्षा

गांधी जी का मानना है कि स्त्रियों का प्रमुख कार्य घर का जीवन होता है, सफल गृहणी संतान के पोषण एवं प्रशिक्षण की पूरी शिक्षा दी जानी चाहिए।

शोध–निष्कर्ष

महात्मा गांधी जी के शिक्षा–दर्शन का दार्शनिक आधार आध्यात्मवादी है, आध्यात्मवादी होते हुये भी ये प्रकृतवादी, प्रयोजनवादी, यथार्थवादी एवं अस्तित्ववादी समझा जाता है, इसके साथ ही गांधी जी का शैक्षिक विचार एवं चिन्तन शिक्षा की नींव एवं राष्ट्र को नये दिशा की ओर अग्रसर करती है। महात्मा गांधी के आचार–विचार एवं व्यवहार उचित दिशा प्रदान करने मे सहायक है, उपरोक्त दृष्टि से उचित शिक्षा निर्माण एवं

गांधी जी ने शिक्षा के नये युग का निर्माण भी किया। महात्मा गांधी जी के शिक्षा–दर्शन एवं विचार की समानता अनेकों शिक्षाशास्त्री एवं दर्शनशास्त्री में दिखाई देती है।

शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक एवं आध्यात्मिक पुनरूत्थान के साथ सामाजिक, राजनैतिक सुधार महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की जरूरत है, इस प्रकार आज की परिस्थिति में महात्मा गांधी जी के प्रभावी विचारों, मूल्यों को आत्मसात् करें और लागू करें। शिक्षा–दर्शन के क्षेत्र में उन चीजों को हो सके जो कालान्तर में वृक्ष बनकर समाज के जीवन में पतझड़ के बजाय वसन्त की संरचना कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मोहनदास करमचन्द गांधीः गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।*
2. *गांधी जी का जीवन–दर्शन : काका साहब कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 14*
3. *शिक्षा के दाशनिक एवं समाज–शास्त्रीय सिद्धान्तः रस्तोगी पब्लिकेशन, गंगोत्री शिवाजी रोड, मेरठ–250002*
4. *ओड डां0 लक्ष्मी एल0 के0ः शिक्षा के दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 1994*
5. *गुप्त और पाल :शिक्षा के सिद्धांत और आधार*
6. *कपिल, एच0 के0 :अनुसंधान विधियों, हरप्रसाद भार्गव बुक आगरा 1990*